प्रेरणादायी मण्डेला

जान मोहम्मद*

"मैंने सदा स्वाधीन व लोकतान्त्रिक समाज के उन आदर्शों को सँजोया है, जिसमें सभी लोग पूरे सौहार्द के साथ मिलजुल कर रहते हैं और जिसमें उनको समान अवसर प्रदान किये जाते हैं। इसी आदर्श के लिये मैं जीवित हूँ और इसके लिये अपने प्राण भी दे सकता हूँ।" मण्डेला ने इस वक्तव्य को व्यवहार के धरातल पर उतारने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस कथन के आलोक में यदि नेल्सन मण्डेला के जीवन का सार प्रस्तुत किया जाये तो विभिन्न उतार–चढ़ाव के चलते वे उस लक्ष्य तक पहुँचने में सफल हुये जो उनके जीवन का लक्ष्य था। साध्य की प्रप्ति के लिये साधन की महत्ता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। विश्व इतिहास में ऐसे भी उदाहरण उपस्थित हैं जिन्होने साध्य को महत्त्व देते हुये साधनों के औचित्य की चिन्ता नहीं की। इटली के मैकियावली को इसका सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है। दूसरी तरफ भारतीय विचारक महात्मा गाँधी, जिन्होने साध्य एवं साधन दोनों की पवित्रता पर बल दिया। इन दोनों महान व्यक्तियों के विचारों को पृथ्वी के दोनों सिरों उत्तरी ध्रुव एंव दक्षिणी ध्रुव के रूप में स्वीकार करें तो कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि दोनों के विचार एक दूसरे के पूर्ण विपरीत थे।

वाद–प्रतिवाद की प्रक्रिया में सम्वाद का निर्माण भी आवश्यक है। सम्वाद ऐसा हो जिसमें दोनों के तत्वों का मिश्रण हो। कोई ऐसा व्यक्तित्व जिसने दोनों का अनुभव प्राप्त किया हो और साथ ही अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की हो। राष्ट्र का निर्माण किया हो तथा अपने देश काल से बाहर विचारों में प्रासंगिकता भी प्राप्त की हो। नेल्सन रोहिल्हाला मण्डेला के जीवन का अध्ययन करने पर मुझे लगा कि उनसे अच्छा और अनुपम उदाहरण मिलना मुश्किल है। मण्डेला का पूरा जीवन संघर्ष में बीता। उनकी लड़ाई अन्याय के खिलाफ थी। इसे समाप्त करने के लिए उन्होंने हिंसा एवं अहिंसा दोनों माध्यमों का प्रयोग किया और अन्त में पूर्णतः अहिंसात्मक होते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त किया।

उद्देश्य– शोध पत्र प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य युवा वर्ग को मण्डेला के व्यक्तित्व से परिचित कराना हैं क्योंकि मण्डेला का जीवन अधीरता से धीरता की कहानी है जो आज के युवा वर्ग की चंचलता और अन्तर्द्वन्द को समाप्त करने में सहायक होगी।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्यत वर्णनात्मक,विवरणात्मक एंव ऐतिहासिक प्रविधि का प्रयोग किया है।

मण्डेला का जीवन एवं शिक्षा– अफ्रीकी अश्वेतों के मसीहा नेल्सन रोहिल्हाला मण्डेला का जन्म 18 जुलाई 1918 को दक्षिण अफ्रीका के ट्रांसकी क्षेत्र के उमताता जिले में म्बासे नदी के किनारे बसे मैजो नाम के एक छोटे से गाँव में अश्वेत मुखिया फाकानिस्वा तथा नेस्कोनी के यहाँ हुआ अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर नजर डाले तो यह समय प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति का समय था। विध्वंस के बाद निर्माण के लिये ही मानों मण्डेला का जन्म हुआ था। मण्डेला के नामकरण में भी कई लोगों का योगदान रहा। परिवार की ओर से उनका नाम रोहिल्हाला रखा गया। खोज़ा भाषा में इसका अर्थ उपद्रवी या शैतानी करने वाला बालक होता है। मण्डेला सरदार के बेटे को कहा जाता है। नेल्सन नाम उनकी पहली कक्षा के पहले दिन उनकी शिक्षिका ने दिया। मण्डेला ने अपने जीवन संघर्ष में तीनों नामों के महत्व को साकार किया। नेल्सन मण्डेला के पिता जनजातीय सरदार के साथ–साथ थैम्बू राजा के राजनीतिक सलाहकार भी थे इस कारण बचपन से मण्डेला के चारों ओर का वातावरण राजनीति और सम्बधित गतिविधियों से जुड़ा रहा और इस वातावरण ने मण्डेला के व्यक्तित्व को प्रभावित करना शुरू कर दिया। लेकिन शीघ्र ही पिता द्वारा इस अन्याय का विरोध करने के कारण उनकी सरदारी छिन गयी शायद नियति को यही मंजूर था जैसे वह चाहती हो कि मण्डेला परिवार की समृद्धता के कारण नहीं बल्कि संघर्ष के बल पर अपनी पहचान बनायें। माँ नेस्कोनी, मैजो गॉव छोड़कर अपने मायके 'कुनु' गॉव आ गयी इस समय मण्डेला की आयु मात्र चार वर्ष थी। मण्डेला की प्रारम्भिक शिक्षा कुनु गॉव के मिशनरी स्कूल में ही प्रारम्भ हुयी। वे अपने परिवार के पहले सदस्य थे जो स्कूल गये इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि कैसे मण्डेला युग प्रवर्तक की ओर अग्रसर होने लगे थे। कुछ समय पश्चात पिता की मृत्यु हो गयी एक बार फिर मण्डेला के परिवार पर विपदाओं का अम्बार लग गया। परन्तु माता नेस्कोनी मण्डेला के भविष्य को लेकर दृढ़ इच्छित थी। अतः उन्होंने मण्डेला को थैम्बू राजा जोगिन्ताबा

*शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग डी0एस0बी0 परिसर कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

के संरक्षण में भेजने का फैसला किया। राजा जोगिन्ताबा के पिता की मृत्यु के समय मण्डेला के पिता ने जोगिन्ताबा को ही राजा बनाने की सलाह दी थी। अतः वे वचनबद्ध थे शायद इसी कारण मण्डेला की जिम्मेदारी उठाने को तैयार हो गए थे। राजा ने मण्डेला को पुत्र की तरह रखा। रानी से भी उन्हें माँ की तरह प्यार मिला। मण्डेला की शिक्षा व्यवस्था राजा द्वारा यह सोचकर की गई कि मण्डेला पढ़–लिख कर पिता की तरह राजनीतिक सलाहकार बन सकें। राजा जोगिन्ताबा अक्सर मण्डेला को समझाते कि याद रखो तुम आम आदमी की तरह गोरों की खदानों में काम करने के लिए या उनकी किसी दूसरी किस्म की गुलामी करने के लिए पैदा नहीं हुए हो। तुम्हें अपने पिता की तरह थेम्बू मुखियाओं का सलाहकार बनना है इसके लिए जरूरी है अच्छी पढ़ाई। पढ़ने और अपने कुल के मुताबिक कुछ कर दिखाने का शौक तो था ही जिस पर जोगिन्ताबा की प्रेरणा, प्रोत्साहन और भरपूर सहायता भी उन्हें मिली। जूनियर सर्टिफिकेट की पढ़ाई जल्दी पूरी कर लेने के बाद अगली शिक्षा के लिए मण्डेला को हीलटाउन भेजा गया। यहाँ उन्हें ब्यूफोर्ट के वैसलीन कॉलेज में प्रवेश दिलाया गया। प्रारंभ में यह कॉलेज फेन्गू अश्वेतों की शिक्षा के लिए अंग्रेजों द्वारा बनाया गया परंतु जल्दी ही यह अफ्रीका के सबसे बड़े कॉलेजों में शामिल हो गया। इसकी विद्यार्थी क्षमता एक हजार तक की थी। यहाँ अधिकांश टीचर अंग्रेज थे और शिक्षा भी अंग्रेजी माध्यम में दी जाती थी। कॉलेज के प्रिंसिपल के बारे में मण्डेला लिखते है, कि हीलटाउन में उस समय के प्रिंसिपल ऑर्थर विलिंग्टन एक मजबूत कद काठी वाले लेकिन संकीर्ण विचारों वाले अंग्रेज थे। जो डींग हांकते हुए अपने आप को ब्रिटेन के नोबेल मैन विलिंग्टन का वंशज मानते थे। जिन्होंने वॉटरलू में नेपोलियन को हराकर यूरोपिय सभ्यता की रक्षा की थी और उसी के वंशज ने तुम्हें सभ्य बनाने का बीड़ा उठाया है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि हम काले अंग्रेज बनेंगे। मण्डेला याद करते है कि इतने बड़े कॉलेज के प्रिंसिपल के विचार इतने संकीर्ण हैं, यह बात हम लोगों ने उस समय इतनी गंभीरता से नहीं समझी जितना आज समझ रहे है।

मण्डेला पढ़ने–लिखने में होशियार तो थे ही, लेकिन उनकी चमक उस समय उजागर हुयी जब उन्होंने 1938 में अपने खोसा भाषा के सर्वोत्तम निबन्ध के लिए हीलटाउन पुरस्कार जीता। पढ़ाई के साथ मण्डेला स्कूल में बॉक्सिंग और लम्बी दौड़ के लिए भी जाने जाते थे। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद अब मण्डेला के लिए समय आ गया था कि वे उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करें। एक साधारण परिवार के बच्चें के लिये यह संभव नहीं था कि वह विश्व विघालय में प्रवेश को ले सके। लेकिन मण्डेला का यह सौभाग्य था उन्हें राजा जोगिन्ताबा का संरक्षण मिला हुआ था। 1939 में मण्डेला का प्रवेश इस कॉलेज में हो गया। इस कॉलेज का प्रशासन श्वेतों के हाथों में लेकिन यह एक मात्र कॉलेज था जहाँ अश्वेत वर्ग भी प्रवेश ले सकते थे। मण्डेला लिखते हैं कि उनके लिये फोर्टहेयर, ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज सब यही था। जब मण्डेला ने प्रवेश लिया तब आस–पास के देशों के काफी लोग वहाँ पढ़ रहे थे। जो बाद में अपने अपने देशों के जानी–मानी हस्तियाँ बने। व्यवहारिक परिस्थतियों के चलते मण्डेला को अपनी ग्रेजुएशन की शिक्षा अधूरी छोड़नी पड़ी। जिसे बाद में उन्होंने पत्राचार के माध्यम से पूरा किया। 1942 में ग्रेजुएशन पूरी करने के बाद उन्होंने जोहान्सबर्ग स्थित विटवारलैण्ड यनिवर्सिटी में प्रवेश लिया। यह एक इंग्लिश स्पीकिंग यूनिवर्सिटी थी और अश्वेत अफ्रीकी लोगों को उच्च शिक्षा में पढ़ाई करने की अनुमति देती थी। यहाँ की लॉ फैकल्टी में मण्डेला को छोड़कर शेष सभी विद्यार्थी श्वेत थे। अध्यापक और श्वेत कोई नहीं चाहता था कि अश्वेत लोग कानून की पढ़ाई करें। यहाँ तक की यदि कोई अश्वेत छात्र के साथ बैठता तो श्वेत छात्र बाहर चले जाते। एक प्रोफेसर ने कटाक्ष भी किया की लॉ की डिग्री के लिये अश्वेत और महिलायें योग्य नहीं होते, फिर भी मण्डेला लगन से अपनी पढ़ाई में लगे रहें। विभिन्न समस्याओं से जूझते हुये 1949 में उन्होंने अपनी कानून की डिग्री प्राप्त कर ली।

मण्डेला के समक्ष चुनौतियाँ:– मण्डेला बचपन से ही गंभीर प्रवृत्ति के जिज्ञासु बालक थे। जब वे कुनु गाँव पहुँचे तो उन्होंने खुद को प्रकृति के बहुत पास आया। परन्तु कुनु की सामाजिक व्यवस्था से मण्डेला बचपन से ही आहत रहते। इस गाँव में अश्वेत वर्ग के दो गुट खोसा तथा सोथो रहते थे। दोनों गुटों में परस्पर अविश्वास के चलते गाँव की शांती भंग रहती। 20 से 30 परिवार वाला यह गॉव एकता के सूत्र में नहीं बंध पा रहा था जिसके पीछे मूल कारण था कि सोथो अंग्रेज वर्ग के समीप थे इनकी दरियादिली के कारण सोथो लोग शैक्षिक उन्नति कर विभिन्न सरकारी नौकरी में थे जबकि खोसा लोग अपनी पारंपरिक पहचान बनाये रखते हुये अपने इतिहास संस्कृति को ही अपने ज्ञान का आधार मानते थे। अंग्रेजों की इस तुष्टिनीति के कारण ही अफ्रीका एक राष्ट्र के रूप में खुद को स्थापित नहीं कर पा रहा था। समय बदलता गया। मण्डेला भी अब तक कई स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे और श्वेत–अश्वेत विरोधी भावना से भली–भाँति परिचित हो चुके थे परन्तु अभी तक मण्डेला निरीक्षण ही कर रहे थे। व्यवहारिक स्तर पर उनकी पहली दखलनदाजी कॉलेज के हॉस्टल में हुयी। फोर्ट हेयर कॉलेज के हॉस्टल में

सीनियर और जूनियर छात्रों के मध्य किसी मुद्दें को लेकर मतभेद था। हॉस्टल का बन्दोबस्त करने के लिये समिति का गठन किया गया। जिसमें सिर्फ सीनियर छात्रों को ही शामिल किया गया। मण्डेला और अन्य जूनियर छात्रों ने इसका विरोध किया और अपनी अलग समिति बनायी। इस समिति में मण्डेला भी शामिल थे। जब संघर्ष ज्यादा बढ़ने लगा तो छात्र हॉस्टल वार्डन के पास गये परन्तु कुछ निष्कर्ष नहीं निकला अन्त में मण्डेला और उसके साथियों की विजय हुयी। इस घटना से एक बात साफ हो गयी कि मण्डेला अब कुनु गाँव वाले मण्डेला नहीं रहे। वे अपने चारों ओर होने वाले अन्याय को देख और समझ रहे थे। इस अन्याय का आधार रंगभेद–नस्लभेद की नीति थी। जो कि द0 अफ्रीकी समाज के लिये नासूर बना था।

रंगभेद अंग्रेजी भाषा के एपार्थाइड का हिन्दी रूपान्तरण है इसका शाब्दिक अर्थ होता है अलहदापन/रंग के आधार पर लोगों को विभाजित करने के साथ–साथ अधिकारों, कार्यों, आवासों आदि का विभाजन कर दिया जाता है। यह विभाजन श्वेत (कॉकेशेयाड) तथा अश्वेत (नीग्रों) के मध्य या सामान्य भाषा में हम इसे गोरे और काले की संज्ञा देते है। अश्वेतों की मूल समस्या यह थी कि श्वेत वर्ग अश्वेतों को मानव होने की निम्नतम श्रेणी में रखते। उन्हें उनके मूल अधिकारों से वंचित कर दिया गया। मण्डेला सहित पूरे अश्वेत समाज के समक्ष यह एक बड़ी चुनौती थी। रंगभेंद की समस्या उन्हें जीवन के प्रत्येक पक्ष पर देखने और सहने को मिली। क्षेत्र चाहे शिक्षा का हो या सार्वजनिक रास्तों का होटलों, रेस्तरां, महंगी गाड़ियों, चुनाव लड़ने, मतदान करने, निर्वाचित होने, अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना तथा भाषण देने तक प्रत्येक क्षेत्र में रंगभेद की समस्या अपना दंश फैलाये खड़ी रहती है। यदि कोई व्यक्ति धोखे से भी किसी अश्वेत प्रतिबन्ध क्षेत्र में चला जाता है तो उसे कड़ी सजा के साथ–साथ जुर्माना भी लगाया जाता, बसों की आगे की सीटों पर श्वेत स्थान आक्षित रहते। अश्वेत केवल पीछे बैठते। इन सब बातों से मण्डेला दुःखी होते। मण्डेला लिखते हैं, "मैं नस्लवादी नहीं। नस्लवाद से मुझे नफरत है चाहे वह श्वेत वर्ग से आये या अश्वेत से। इस संदर्भ में हीलटाउन स्कूल की घटना का वर्णन दृष्टव्य है। स्कूल के समय मण्डेला की उम्र लगभग 17 से 18 वर्ष के आस–पास होगी। कॉलेज के हॉल में एक प्रसिद्ध कवि क्रून मेघाई को भाषण देने के लिये आमन्त्रित किया गया था। कॉलेज के प्रिंसिपल डा0 विलिंग्टन उनके सम्मान में खड़े थे मण्डेला की जीवन की यह पहली घटना थी जब उन्होने देखा कि एक श्वेत, अश्वेत के सम्मान में खड़ा है। कवि महोदय अपनी पारम्परिक खोसा पोशाक पहने हुये थे। यद्यपि उनका बोलना इतना प्रभावशाली नहीं था परन्तु जिस तरह से उन्होने अफ्रीकी संस्कृति की बढ़ाई की और श्वेत वर्ग की आलोचना की इससे कवि बहुत स्पष्ट वक्ता और साहसी लगे। कवि के भाषण से मण्डेला को खोसा होने पर गर्व हुआ परन्तु उनके मन में एक प्रश्न यह भी था कि खोसा ही सर्वश्रेष्ठ क्यों? इस बात से मण्डेला को थोड़ा दुःख था। क्योंकि श्वेत वर्ग की प्रताड़ना का शिकार अश्वेत वर्ग था न कि खोसा, जुलु, नेटाल या सोभो। इसलिए मण्डेला यह मानते थे कि द0 अफ्रीकी राष्ट्र निर्माण के लिए सभी का योगदान आवश्यक है परन्तु यह एकीकरण इतना सरल नहीं था, जितना सतही तौर पर देखने से लगता है यह एक महत्वपूर्ण चुनौती थी। इधर श्वेत सरकार की प्रताड़ना भी बड़ती जा रही थी। अन्याय की हद तब हो गयी जब 1948 में द0 अफ्रीका में नेशनल पार्टी सत्ता में आयी इस पार्टी का चुनावी एजेण्डा अश्वेत वर्ग की बड़ती उग्रता को कम करना था इसी कारण पार्टी की जीत हुयी। सत्ता में आते ही पार्टी ने रंग दिखाना शुरू कर दिया। अब तक श्वेत–अश्वेत का जो भेद समाज में वैचारिक स्तर तक था नयी सरकार ने उसे कानूनी रूप देना शुरू कर दिया। 1949 में पारित एक कानून के तहत व्यवस्था थी कि अलग–अलग नस्ल के लोगों को सेक्स सम्बन्ध बनाने को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया वर्ष 1950 में जनसंख्या रजिस्ट्रीकरण कानून बना, इसके अनुसार द0 अफ्रीकी की जनसंख्या को नस्ल के आधार पर चार भागों में विभाजित कर दिया गया। प्रथम वर्ग में मिश्रित वर्ग के लोग दूसरे वर्ग में अफ्रीकी तीसरे वर्ग में भारतीय और चौथे में श्वेत लोगों को रखा गया। नस्ल की पहचान में कोई सन्देह होता तो बालों मे पेन्सिल फिरा कर पहचान की जाती। नस्ल का निर्धारण श्वेत अधिकारी करते। वर्ष 1950 में ही ग्रुप एरिया एक्ट भी पारित किया गया। इस एक्ट की विशेषता यह थी कि शहर एवं कस्बों में नस्ल के आधार पर रहने के लिये स्थान निर्धारित कर दिए गये। इस एक्ट का सहारा लेकर अश्वेतों को श्वेत बस्तियों से निकालकर जबरदस्ती उनके लिये निर्धारित बस्तियों में भेज दिया गया। इस प्रकार नस्लभेद और रंगभेद को पूरी तरह अमली जामा पहनाते हुये अश्वेतों को अपनी कैद में जकड़ लिया था। मण्डेला सहित पूरा अफ्रीकी समाज इस कैद से निकलने को छटपटा रहा था।

साध्य और साधनः– अन्याय का सामना करने के लिये बहुत हिम्मत की आवश्यकता होती है। अन्याय सहना आसान है किन्तु उसका सामना करना बहुत मुश्किल। बचपन से ही मण्डेला के व्यक्तिव पर उनके पिता का प्रभाव रहा। पिता स्वंय कभी अन्याय के आगे नहीं झुके और इसी कारण उन्हें अपनी सरदारी गवानी पड़ी। मण्डेला ने भी अन्याय का विरोध करना सीखा था, परन्तु इस विरोध का माध्यम क्या हो यह प्रश्न महत्वपूर्ण था। भारतीय विचारक

गॉधी ने अपने द0 अफ्रीका प्रवास के दौरान वहाँ रहने वाले भारतीयों एवं स्वयं के साथ हुयी बदसुलूकियों का बदला लेने लिये अहिंसा का प्रयोग किया और विजय प्राप्त की। इस कारण वहाँ रहने वाले अफ्रीकियों पर भी अहिंसा के सिंद्धात और विजय प्राप्त की। इस कारण वहाँ रहने वाले अफ्रीकियों पर भी अहिंसा के सिद्धात और उसकी शक्ति का व्यापक प्रभाव पड़ा परिणामस्वरूप मण्डेला भी अहिसा के मार्ग को ही उचित मानते थे इसी कारण अन्य राजनीतिक दलों का सदस्य बनने के बजाय अहिंसा की नीति में विश्वास करने वाली अफ्रिकन नेशनल कांग्रेस का दामन थामा। किन्तु अपेक्षित सफलता प्राप्त न होने से मण्डेला का मन विचलित हो रहा था। इधर नये–नये कानूनों से मण्डेला बहुत दुखी हो रहे थे अश्वेतों पर हो रहे जुल्मों को वे अपने ऊपर हो रहे जुल्म मान रहे थे। उनका मानना था कि अफ्रिकन नेशनल कांग्रेस को वर्षों पुरानी उदारवादी नीतियों में बदलाव लाना चाहिए क्योंकि सिर्फ पत्र लिखने से काम नहीं चलने वाला। सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिये अहिंसा की नीति का अनुसरण करते हुए धरना प्रदर्शन, हड़ताल तथा सविनय अवज्ञा जैसे आन्दोलनों का सहारा लेना चाहिये। बसों में किराया बढ़ाये जाने के विरोध में हुयी हड़ताल में मण्डेला ने पहली बार भाग लिया यद्यपि इस हड़ताल में उनकी कोई पदेन भूमिका नहीं थी किन्तु हड़ताल की सफलता ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। इसी क्रम में 1952 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन हुआ यद्यपि सरकार की बरबर्ता के कारण आन्दोलन सफल नहीं हुआ लेकिन लोगों की बड़ी संख्या में शामिल होने से भविष्य में नई रणनीति के आधार पर हड़ताल और अन्य अवज्ञा आन्दोलनों को करने की शक्ति मिली। लेकिन दूसरी तरफ सरकार की बड़ती क्रूरता ने जब हद पार कर दी तो अन्य युवाओं की तरह मण्डेला का भी खून खौल उठा उन्होंने अहिंसा की नीति को त्याग कर हिंसा को परिवर्तन का माध्यम बनाने का निश्चय किया। अफ्रिकन नेशनल कांग्रेस की सरपरस्ती में एक क्रान्तिकारी दल का गठन किया गया इसका नाम 'एम खोतों वी सिज्वे' रखा गया खोसा भाषा में इसका अर्थ होता है 'राष्ट्र का भाला'। यह संगठन मण्डेला की जिद पर बना अतः उन्हें ही इसका पहला अध्यक्ष बनाया। जिम्मेदारी निभाने के लिये ने क्रान्तिकारी गतिविधियों का प्रशिक्षण लेने देश से बाहर भी गये। इस प्रकार हम देखते हैं कि समय वातावरण एवं परिस्थितियों ने मण्डेला को कैसे प्रभावित किया। उल्लेखनीय तथ्य है कि जब तक मण्डेला अहिंसा की नीति का अनुसरण करते रहे, कभी श्वेत प्रताड़ना का शिकार नहीं हुये लेकिन जैसे ही हिंसा का सहारा लिया कैदी जीवन से बंध गये क्योंकि श्वेत सरकार द्वारा उग्रवादी संगठन के निर्माण का आशय सरकार का तख्ता पलट योजना से लगाया गया था। अतः उन पर देश द्रोह का मुकद्दमा चला। जब वे अदालत में सम्बधित कार्यवाही प्रक्रिया के दौरान उपस्थित हुये तब जिस प्रकार से श्वेत सरकारी व्यवस्था की आलोचना की इसका एक उदाहरण निम्नलिखित है, "मैं इस न्यायालय में श्वेत न्यायधीश के सामने उपस्थित हूँ। एक श्वेत सरकारी वकील मेरे ऊपर आरोप सिद्ध कर रहा है कोर्ट के श्वेत अर्दली ही मुझे यहाँ तक लेकर आये हैं। आखिर श्वेत ही क्यूँ? क्या कोई मुझे इसका जबाव दे सकता है अफ्रीका के इतिहास में आज तक ऐसा क्यूँ नहीं हुआ कि किसी अश्वेत मुजरिम को उसके अपने ही लोगों द्वारा न्याय पाने का सम्मान मिला हो। माननीय न्यायमूर्ति जी मैं स्पष्ट कहता हूँ कि मुझे नस्लवाद से सख्त नफरत है। अब तक की अपनी पूरी जिन्दगी में नस्लवाद के खिलाफ लड़ता रहा हूँ और शायद अन्त तक इससे लड़ता रहूँगा।"

मण्डेला की विजय– 12 जून 1964 को मण्डेला और अन्य साथियों को आजीवन कारावास की सजा काटने के लिये रॉविन आईलैण्ड द्वीप पर भेज दिया गया। इस जेल के सम्बध में अफ्रीकियों की मान्यता थी कि जो कोई इस जेल में जाता वापस नहीं आता है। इस समय मण्डेला की उम्र छियालीश वर्ष थी। मण्डेला को भी सरकार की मंशा कुछ ठीक नहीं लग रही थी अतः वे भी समझने लगे कि अब शायद ही कभी वापस लौट पायेगें। परन्तु ऐसे वक्त में उन्होने हिम्मत नहीं हारी और धैर्य का दामन थामा क्योंकि विपत्ति की इस घड़ी में यदि मण्डेला ही कमजोर पड़ जाते तो अन्य साथियों को कौन संभालता। मण्डेला के व्यक्तित्व में परिवर्तन आना अब स्वाभाविक है धीरे–धीरे उनकी उग्रता शालीनता में बदलने लगी। अब वे जेल में रक्षकों के साथ अच्छे से पेश आने लगे और अपनी माँगो को पूरा करवाने के लिये अहिंसा के मार्ग पर चलते हुये सत्य के प्रति आग्रह करते हुये नजर आते। उनकी अधिकांश माँगे मान ली जाती। इस प्रकार जब से मण्डेला ने अहिंसा के जाग्रत रूप को सह्रदय अपना लिया वे हर काम में विजय पाते जाते।

इन छोटी–छोटी विजयों से उन्हें भविष्य के लिये आत्मबल मिलता। उनका व्यक्तित्व निखरता जा रहा था साथ ही अन्याय के प्रति दृढ़ता से मुकाबला करने में भी अब वे पहले से ज्यादा परिपक्व हो चुके थे। 1970 में रॉबिन द्वीप पर कर्नल बैडेन हार्ट की नियुक्ति हुयी, यह कमाण्डर बहुत ही निर्दयी माना जाता था। उसने जेल बन्दियों के सभी तरह के विरोध को नेस्तनाबूद करने की ठान ली। जेल कमाण्डर तानाशाही पर उतर आया। कैदियों को तलाशी के नाम पर सर्द रातो में वस्त्रहीन कर घण्टो खड़ा किया जाता यदि कोई कैदी बीमार हो जाता तो जेलर खुश होता कि अब यह शीघ्र ही मर जायेगा।

कुछ समय पश्चात रेड क्रॉस सोसायटी का एक दल जेल में कैदियो की स्थिति का अध्ययन करने आया उनके साथ बैडेनहार्ट भी मौजूद था कैदियों ने अपनी ओर से प्रतिनिधित्व करने के लिये मण्डेला को चुना। मण्डेला ने बिना डरे अपना पक्ष रखा और जेलर द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों का चिठ्ठा खोल दिया। बैडेनहार्ट ने उसी समय चेतावनी दी कि उन्हे चुप हो जाना चाहिए अन्यथा अन्जाम बुरा होगा। फिर भी मण्डेला डरे नहीं। पैनल के जाने के बाद मण्डेला पर बहुत अत्याचार किये गये लेकिन एक सच्चे सत्याग्रही होने के कारण वे चुपचाप सब कुछ सहन करते रहे। कुछ समय बाद बैडेन हार्ट का स्थानान्तरण कर दिया गया। और मण्डेला और उनके साथियों के साथ होने वाला अपव्यवहार तो समाप्त हो ही गया। साथ ही उन्हें अन्य प्रकार की सुविधायें भी मिल गयीं। इधर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मण्डेला काफी चर्चित हो चुके थे। श्वेत सरकार पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव था कि राजनीतिक बदियों को रिहा किया जायें वे अपराधी नहीं है बल्कि अपने अधिकारों के लिये लड़ने वाले आन्दोलनकारी हैं। मार्च 1978 में एक 'The Post' नाम के स्वातो अखबार ने मण्डेला की रिहाई आंदोलन चलाया। 1979 में भारत सरकार ने मण्डेला को नेहरू पुरूस्कार से नवाजा। जेल में रहते हुये ही उन्हे लन्दन विश्वविद्यालय का चांसलर नामित किया गया। 1980 में उन्हे कई देशों से मानद उपाधियाँ मिली। इन सब ने मण्डेला की रिहाई का नैतिक समर्थन दिया। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के चलते मण्डेला की रिहाई की माँग जोर पकड़ने लगी। अफ्रीका के अश्वेतो में राजनीतिक चेतना का विकास बहुत तीव्र गति से हो रहा था। श्वेत सरकार समझने लगी थी कि समय आ गया है कि वर्षो पुरानी रंग भेद नीति के आधार पर शासन कार्य सम्भव नहीं हैं। अतः तत्कालीन द0 अफ्रीकी राष्ट्रपति डी0 क्लार्क ने उनकी रिहाई के लिये आवश्यक कदम उठाना शुरू कर दिये। लेकिन कुछ शर्तो के साथ मण्डेला को स्वतन्त्र करने की तैयारी की गयी परन्तु मण्डेला सशर्त रिहा होने को तैयार नहीं थे क्योंकि जिन उम्मीदों और आदर्शो को प्राप्त करने के लिये मण्डेला ने अपना पूरा जीवन लगा दिया उन्हें प्राप्त किये बिना उनके रिहा होने का कोई औचित्य न था। अंत में डी0 क्लार्क ने उन सभी शर्तों को मानने की हामी भर दी। 27 वर्ष बाद 11 फरवरी 1990 को मण्डेला कैद से बाहर आये यह रिहाई मण्डेला की नहीं बल्कि उस पूरे अश्वेत वर्ग की रिहाई थी जो अब तक गुलामी की जंजीरों से जकड़ा था। 1994 में हुये प्रथम लोकतान्त्रिक चुनाव में अफ्रीकन नेशनल पार्टी की विजय हुयी। नेल्सन रोहिल्हाला मण्डेला को देश का प्रथम पूर्व लोकतान्त्रिक और अश्वेत राष्ट्रपति चुना गया।

मण्डेला के विचारों की प्रासंगिकता –: मण्डेला का व्यक्तित्व हिंसा पर अहिंसा की विजय का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है प्रत्येक समाज जहाँ अन्याय मौजूद होगा, मण्डेला के विचार प्रासंगिक होंगे। वर्तमान समय के लोगों को उनमें भी मुख्यतः युवा वर्ग को मण्डेला के उन 27 वर्षो के कैदी जीवन से धैर्य की प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये जिसने अधीर मण्डेला को धीर बना दिया। धैर्य उनके व्यक्तित्व का अनिवार्य अंग बन गया। जिसने उन्हे विजयी बना दिया। साधारण सा जीवन जीते हुये उच्चतम शिखर तक पहुँचने वाले मण्डेला बहुआयामी आदर्श प्रस्तुत करते हैं। उनके व्यक्तित्व के कुछ प्रेरणादायी तत्वों का उल्लेख निम्नलिखित है–

- मण्डेला ने बचपन से ही परिस्थितियों को विपरीत पाया किन्तु वे निराश नहीं हुये। आज के अधिकांश लोगों विशेष कर युवाओं में यह समस्या ज्यादा है कि वे विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करने के बजाये उन्हें नियति मानकर या तो बैठ जाते है या शीघ्र बदलाव के लिये आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं। एक समय मण्डेला के गर्म खून के साथ भी यही हुआ था परन्तु अन्त में उन्होने खुद को बदलते हुये अहिंसा को अपनाया। उनका मानना था कि यह समझो कि हम इस धरती पर मनुष्य के रूप में आखिरी बार आये हैं और इस अवसर से हम एक बार चूक गये वो फिर कभी प्राप्त नहीं होगा।
- मण्डेला जीवन भर स्वयं से ज्यादा दूसरों के लिये जिये। बचपन से ही उनके अन्दर यह विशेषता कूट–कूट कर भरी थी। फोर्टहेयर कॉलेज में मण्डेला ने खाने को लेकर विरोध जताते हुये छात्र संघ की कार्यकारिणी से इस्तीफा दे दिया तो प्रिंसीपल ने उन्हें एक अवसर दिया कि यदि वे मैनेजमेण्ट का साथ दें तो उन्हे स्कूल से नहीं निकाला जायेगा। मण्डेला इस समय अपने साथियों के नेतृत्व कर्ता थे अतः उन्होने अन्याय के सामने झुकने से अच्छा कॉलेज छोड़ने का निर्णय लिया। यह प्रेरणादायी प्रसंग यह शिक्षा देता है कि जीवन में प्रलोभन देखकर सत्य से विचलित नहीं होना चाहिये। उन्ही के शब्दों में "मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में हैं कि वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ दूसरों की उन्नति के लिये भी जीवन भर प्रयास करें।"
- मण्डेला के जीवन से सीखने की एक महत्वपूर्ण बात है मित्रता शुरू से ही मण्डेला का व्यक्तित्व ऐसा था कि जो उनसे मिलता, प्रभावित हुये बिना नहीं रह पाता। तथा शीघ्र ही लोग उनकी मित्र के बंधन मे बध जाते। परन्तु जगह बदलने से सम्पर्क टूट जाता लेकिन कुछ ऐसे मित्र भी बने जिनका साथ मण्डेला ने जीवन भर

नहीं छोड़ा। उनके विचार अपने दोस्तों तक ही सीमित नहीं थे बल्कि उनका मानना था कि अपने दुश्मन के साथ शान्ति चाहते है तो उसके साथ काम कीजिए वह आपका पक्का सहयोगी बन जायेगा।

- मण्डेला ने शिक्षा को बहुत महत्व दिया उनका मानना था कि शिक्षा ही वह माध्यम है जो लोगों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रत्येक क्षेत्र में उनकी दयनीय स्थिति से उन्हे उभार सकती है अतः सभी का शिक्षित होना आवश्यक है।
- मण्डेला का सम्पूर्ण जीवन संघर्ष की गाथा रहा है। उन्होने अन्याय के साथ तादात्म्य स्थापित नहीं किया बल्कि उसके विरोध में खड़े रहे।
- यह अन्याय विरोधी व्यक्तित्व उनके जीवन का मार्गदर्शक बन गया। आज महिलाओं के साथ छेड़–छाड़, बलात्कार, जाति के आधार पर भेद–भाव, भ्रष्टाचार धर्म की श्रेष्ठता का दम्भ इत्यादि समस्याओं के स्थान पर मण्डेला के विचार प्रासंगिक है। आवश्यकता है तो बस उनके व्यक्तित्व, उनके विचारों को जीवन में अमल करने की।
- निष्कर्षतः मण्डेला का सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श प्रस्तुत करता है जो कि प्रत्येक मनुष्य द्वारा अनुकरणीय है जो काम भारत मे रहकर महात्मा गॉधी ने किया वही कार्य द0 अफ्रीका में रहकर नेल्सन मण्डेला ने किया इसी कारण उन्हे द0 अफ्रीकी गॉधी की संज्ञा दी जाती है मण्डेला ने अपनी मृत्यु से पूर्व कहा था कि एक मण्डेला मर सकता है उसके बाद हजारों मण्डेला पैदा होगें। इस वक्तव्य के पीछे शायद मण्डेला की यह धारणा रही होगी कि वे प्रत्येक मनुष्य से अपेक्षा करते हैं कि हिंसा का मार्ग छोड़कर अहिंसा का मार्ग अपनाये। मनुष्य मात्र से प्रेम करें। समाज को विघटित करने वाले रंग, जाति, धर्म, भाषा इत्यादि कारको से दूर रहें। क्योंकि इन कारणों से मनुष्य की बौद्धिक क्षमता का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। इस प्रकार मण्डेला हमारे समाज में अपने विचारों के रूप में सदा के लिये जीवित रहेगें। वे अमर है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- सिहं वीरेन्द्र, महामानवमण्डेला, बुक क्राफ्ट पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2014
- कपूर सुशील, नेल्सन मण्डेला (कैदी से राष्ट्रपति बनने की कहानी) प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2015
- यादव गिरीश, नोबेल पुरूस्कार विजेता भारतीय, प्रशान्त बुकडिस्ट्रीब्यूटर्स दरिया गंज, नई दिल्ली, 2014
- मुखर्जी रवीन्द्रनाथ, सामाजिक समस्याये, विवेकप्रकाशन, दिल्ली 2010
- Kadar Asmal, David chidester, Wilmot James, Nelson Mandela in his own words, Jonathan Ball Publishar's 2002
- गॉंधी करमचन्द मोहनदास, सत्य के साथ मेरे प्रयोग, रूपा पब्लिकेशन इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 2014 (संशोधित संस्करण)